

मिठा मैगसि चंद्र महरबाना।

समरथ साई सचा सति संग जा सुलताना॥

शुभ गुण संपन्न नाथ नीति निपुण साई सब विधि परम सुजाना।

क्षमा सदन साई चंद्र वदन सदां माणियो कुशल कल्याणा॥

सदा रूप उजागर शोभा जा सागर परा प्रेम प्रधाना।

नितु नेह में नागर रस रत्नाकर हर्ष हुलास निधाना॥

राम नाम दाता जन पितु माता सदा भक्त वत्सल भगवाना।

प्रणतनि पालक सब जग मालिक भव सागर जलयाणा॥

दीननि बंधू सजन सुख सिंधू सत्य विद्या विद्वाना।

रस राज रहीं नवां सुखड़ा लहीं सारे जग में सुरिति भुलाना॥

मुंहिजा निर्मल धणी पंहिजे वर खे वर्णीं निश दिन कर गुण गाना।

शाहनि जा शाह निमाणनि नाह जसु ग़ाइनि वेद पुराणा॥

अधीननि आधार भक्ति भण्डार सनेहजा सुख सरसाना।  
कया चरित अपार बेहद बेशुमार बुधी बुधी हींअ हर्षाना॥

परा प्रेम प्रवीन नितु नेह नवीन श्रीराम तत्व जीअ जाना।  
मिठा साईं अमां तवहां चरण चुमां कयां तनु मनु सभु कुलिबाना॥